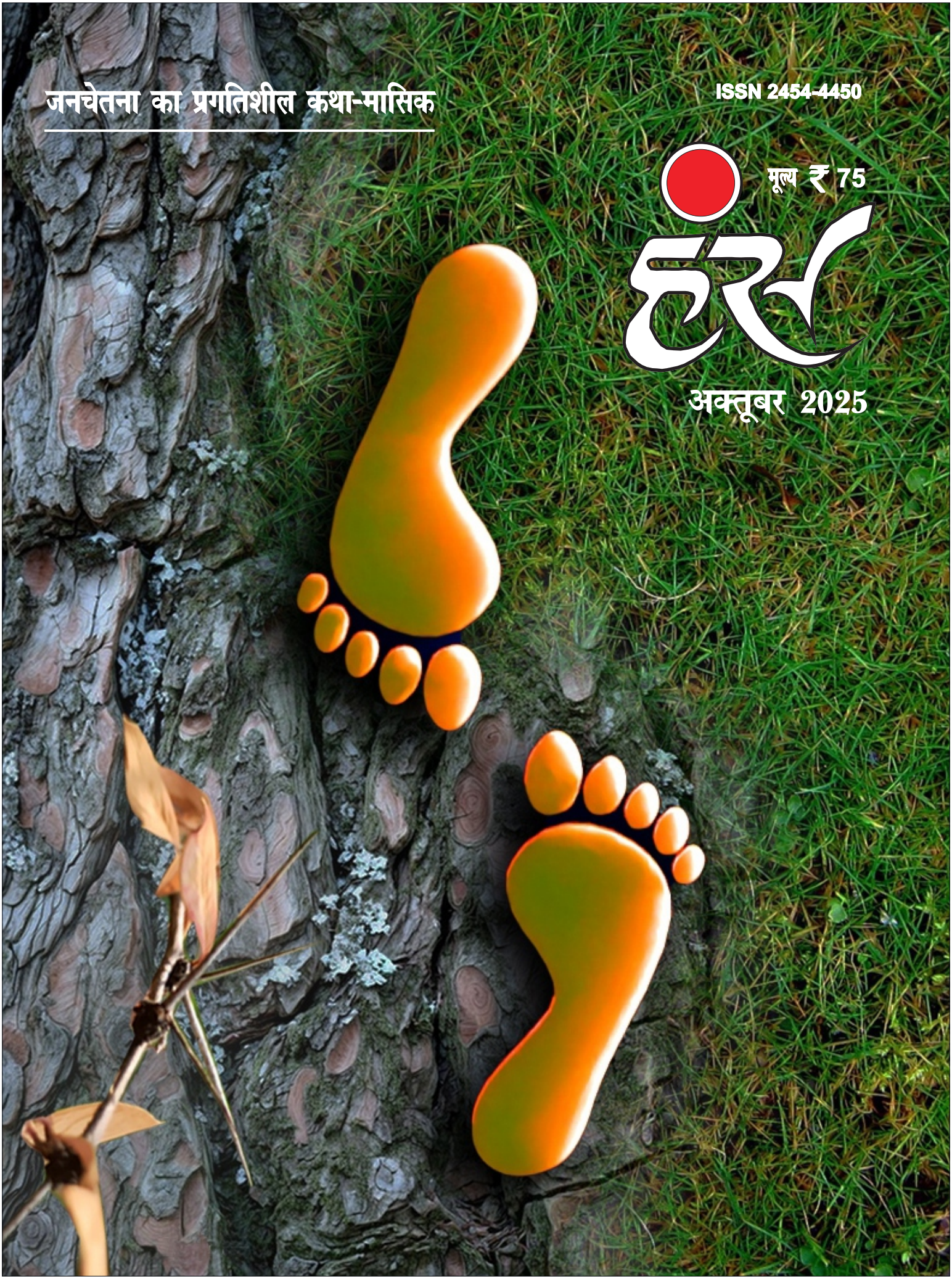

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 75

हंस

अक्तूबर 2025

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-468 वर्ष : 40 अंक : 3 अक्तूबर 2025

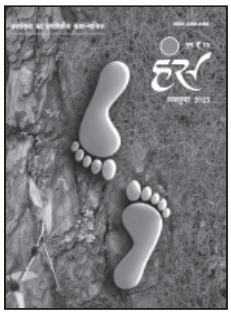

आवरण : अंतरिक्ष

हंस

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
सिद्धेश्वर, अजय कुमार सिन्हा, टी.पी. पोद्दार

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 75 रुपए प्रति
वार्षिक रजिस्टर्ड : 1250 रुपए (व्यक्तिगत)
संस्था/पुस्तकालय : 1500 रुपए (संस्थागत)

वार्षिक पीडीएफ : 600 रुपए (व्यक्तिगत)
पीडीएफ : 700 रुपए (संस्थागत)
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

अक्तूबर, 2025

इस अंक में

मेरी तेरी उसकी बात
4. ईश्वर ही सत्य है : राजेन्द्र यादव
('हंस', जनवरी 1996)

अपना मोर्चा
8. पत्र

मुड़ मुड़ के देख
12. धूप का खेल : सारा राय
('हंस', अगस्त 1992)

कहानियां
18. बिना छतरी वाली लड़की : योगेंद्र कृष्णा
24. ब्रेकफेल : प्रभात गौतम
32. गाज़ीपुर के गिद्ध : प्रकृति करगेती
56. रात के आगंतुक : जांग रयूजिन
(कोरियाई कहानी)
(अनुवाद : विजय कुमार यादव)

हंस युवा कथा सम्मान से पुरस्कृत
48. बगुले : अरोध कुमार मंडल

कविताएं
54. प्रेमा झा, नरेश अग्रवाल, क्रांति नौटियाल
55. अनिल गंगल, अनुपम त्रिपाठी

संस्मरण
62. बैरन अलेक्जेंडर ब्रैंगल की यादों में
दॉस्तोएव्स्की (भाग-2) : रूपसिंह चंदेल

लघुकथा
53. संगत : जीतेंद्र कुमार

ग़ज़ल
17. ज्ञानप्रकाश विवेक
75. आलोक यादव

परख
68. उगलत-लीलत पीर घनेरी : रोहिणी अग्रवाल
72. घर और घेरे के बीच स्त्री : उपासना
76. लहर के खिलाफ एक सफर : चंद्रभूषण
78. संस्मरणों के रास्ते बनी आत्मकथा : पल्लव
81. जीवन की आंच में पकी संवेदनाओं
का दस्तावेज : रक्षा गीता
85. गुजरात की महिला किसानों की जिजीविषा :
विजय कुमार तिवारी
87. जब तक ऊंची न हो जमीर की लौ :
सुहेल वहीद

साहित्यनामा
89. अवधू माया तजी न जाई : साधना अग्रवाल

शब्दवेधी/शब्दभेदी
94. बांग्लादेश के नास्तिक कहां जाएं? :
तसलीमा नसरीन

रेतघड़ी
96

ईश्वर ही सत्य है

राजेन्द्र यादव

भारत सरकार का आदर्श वाक्य (मोटो) है 'सत्यमेव जयते'. इधर दिल्ली की भाजपाई सरकार ने शहर के हर बिजली के खंभे पर वाक्य लटकवा दिए हैं 'ईश्वर ही सत्य है'. (इससे पहले यह शाश्वत वाक्य श्मशानों में मैंने जरूर पढ़ा था) दोनों में ही 'सत्य' शब्द कॉमन है. इसलिए दोनों में एक अंतर्सूत्रता है– जो 'सत्य' जीतता है वही ईश्वर है. यहां 'सत्य' निरपेक्ष है, इसे कौरव और पांडव दोनों अपने-अपने पक्ष में हथिया सकते हैं. अंत में वह उसका होता है जो विजयी है. यानी 'सत्य' सिर्फ उनका होता है, जो जीतते हैं या सत्ता में होते हैं. महत्वपूर्ण यहां यह नहीं है कि यह विजय उन्होंने किन झूठ-सच या दंद-फंदों से हासिल की. महत्वपूर्ण है, सत्ता का सत्य और उसका ईश्वर होना. रावण या कौरव विजयी होते तो सत्य निश्चय ही उनके साथ होता. यहां यह सवाल कोई नहीं पूछता कि तुर्क, मुगल या अंग्रेज अगर हमारे ऊपर आक्रमणों में विजयी हुए तो क्या 'सत्य' उनके साथ था? जरूर रहा होगा, वरना वे विजयी ही कैसे होते? हजार साल राज्य कैसे करते? मगर नहीं, वहां हम पलटा-दांव मारते हैं और दूसरी तरह देखते हैं : हालांकि हम पराजित हुए या जय उनकी हुई, मगर 'सत्य' हमारे ही साथ था. यानी सत्य को जय-पराजय से कोई लेना-देना नहीं, वह सुविधानुसार साथ होता है. अंग्रेजों के समय सत्य गांधीजी के पास चला गया और वे मजे में सत्य के साथ प्रयोग करने लगे. उधर हिंदुत्ववादी चिंतक, सत्य को अंग्रेजों के साथ ही मानते थे इसलिए उनकी जय-जयकार करते थे. दोनों के दो सत्य थे. अंत में हिंदू-सत्य ने गांधी के सत्य को गोलियों से भून डाला और सत्य को अपने साथ कर लिया. जो अंग्रेज नहीं कर पाए, वह इन्होंने कर दिखाया. इस प्रकार गांधी का सत्य भाजपा का सेवक हो गया. मस्जिद बनवाते समय यही सत्य कभी बाबर के साथ रहा होगा, मस्जिद तोड़ते समय बजरंगियों को मिल गया. इस भूल-भुलैया से गुजरने के बाद आखिर हम किस नतीजे पर पहुंचे? यही कि आज सत्य चूंकि भाजपा के साथ है इसलिए वे ही 'ईश्वर' हैं और उनके खिलाफ कुछ भी बोलना ईश्वर के खिलाफ बोलना है. आज की भाजपाई राजनीति के संदर्भ में कायदे से यह संदेश 'ईश्वर ही सत्य है' न होकर 'राम नाम सत्य है' होना चाहिए. क्योंकि उन्हें यहां तक लाए तो राम ही हैं, मगर लगता है कि या तो राम की प्रोन्नति कर दी गई है या फिर उस जड़ को ही पकड़ा गया है जिसके राम सिर्फ अवतार हैं.

ईश्वर सत्य तो है, मगर निर्गुण और निराकार है, उसे अपने 'होने' का प्रमाण देना होता है. अवतारों या द्रष्टाओं के माध्यम से, अवतार स्वयं ईश्वर के अंश होते हैं और अपने ईश्वरीय प्रतिशत या कलाओं के हिसाब से शरीर धारण करके बार-बार सत्य की स्थापना करते हैं. 'द्रष्टा' स्वयं अवतार नहीं है, मगर प्रतिनिधि या नुमाइंदे जरूर हैंवे हमें ईश्वर के बारे में बताते हैं, उसके स्वरूप की व्याख्या करते हैं. दूसरे शब्दों में वे ईश्वर नाम के निराकार सत्य को 'पकड़' कर हम तक पहुंचाने वाले एंटिना हैं. इसीलिए वे ऋषि या पैगंबर कहलाते हैं. इन्हीं के कथनों, उवाचों या 'दर्शन'